सम्पादकीय .....

शान्ति की शक्ति

स्थूल या सूक्ष्म कोई भी एकत्रित चीज़, शक्ति का रूप धारण कर लेती है। जैसे आसमान से गिरती हुई एक बूंद में कोई विशेष ताकत नहीं होती है लेकिन ऐसी-ऐसी जब बहुत बूंदें एकत्रित हो जाती हैं तो कई बार, बाढ़ का रूप धारण करके गाँव, खेत बहा ले जाती हैं। मनुष्य इस शक्ति के आगे बड़ा बेबस नज़र आता है। इसी प्रकार एक पैसा कोई मायने नहीं रखता लेकिन एकत्रित किए हुए पैसे, धन-शक्ति में बदल जाते हैं। एक शहर में एक बड़े मंदिर के मुख्य द्वार पर एक चक्की पीसती हुई महिला की मूर्ति बनाई हुई थी। पूछने पर लोगों ने बताया कि पिसाई के एक-एक, दो-दो पैसे को एकत्रित कर इस महिला ने इस मंदिर का निर्माण करवाया। देखने में तो एक या दो पैसे बड़ी बात नहीं है पर जब वे एकत्रित हो गए तो भव्य मंदिर में बदल गए। सैकड़ों वर्ष गुज़र जाने के बाद भी धन की यह शक्ति लोगों को प्रेरणा दे रही है। इसी प्रकार, कहावत है, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। एक व्यक्ति की आवाज़ नहीं सुनी जाती लेकिन जब संगठन बना लिया जाता है तो उस आवाज़ का महत्त्व बढ़ जाता है इसलिए आजकल विभिन्न लोग संगठन बनाकर आवाज़ उठाते हैं। संगठन की शक्ति कई कानून निर्मित कर सकती है और कई कानून रद्द भी कर सकती है। उपरोक्त शक्तियाँ स्थूल शक्तियाँ हैं लेकिन शांति की शक्ति सूक्ष्म शक्ति है जो दिखाई नहीं देती, केवल महसूस की जा सकती है और सभी स्थूल शक्तियों की आधारभूत शक्ति है। जब हम एक-एक शुभ संकल्प को निरंतर अपने भीतर जमा करते जाते हैं तो एकत्रित हुए शुभ संकल्प ही शांति की शक्ति में बदल जाते हैं। ये एकत्रित शुभ संकल्प हमें हर प्रकार की सिद्धि प्राप्त करा सकते हैं। दूसरे शब्दों में, इसे राजयोग की शक्ति भी कह सकते हैं। ये शुभ संकल्प आत्मचिंतन से संबंधित, परमात्म-चिंतन से संबंधित और विश्व-कल्याण से संबंधित होते हैं। ऐसे शुद्ध संकल्पों से भरा हुआ मन असंभव को संभव करने में, हर परिस्थिति में सफलता प्राप्त करने में, अनुकूल परिवर्तन करने में और अनेक प्रकार की मानसिक ग्रंथियों को सुलझाने में सक्षम हो जाता है। वर्तमान समय की पुकार है शांति की शक्ति। संसार की मुख्य तीन सत्ताएँ, इस शक्ति के अभाव में संतोषजनक परिणाम नहीं दे पा रही हैं। वे सत्ताएँ हैं – राज्य-सत्ता, धर्म-सत्ता और विज्ञान की सत्ता।

1. राज्य-सत्ता – राज्य-सत्ता का निर्माण सुव्यवस्था और सुख प्रदान करने के लिए किया गया। राजा का चरित्र कैसा होना चाहिए, भक्तिमार्ग के शास्त्र रामायण में इसका उल्लेख मिलता है। बाली के परलोक सिधारने पर श्री रामचंद्र जी ने सुग्रीव को किष्किंधा का राज्य देना चाहा तो सुग्रीव ने कहा – ''हे प्रभु! भाई की हत्या करवाकर प्राप्त होने वाले इस राजसुख से मेरा मन उपराम हो रहा है। मैं भगवे वस्त्र पहनकर, संन्यासी बन जाना चाहता हूँ। यह राज-वैभव मुझे नहीं चाहिए। मैं जीवन के शेष समय को, किसी कन्दरा में आपका चिंतन करते हुए गुज़ार देना चाहता हूँ।'' तब श्री रामचंद्र जी ने बहुत सुंदर उत्तर दिया – ''हे सुग्रीव! सच्ची संन्यास वृति वाला व्यक्ति ही तो सच्चा राजा होता है। जिसका मन उपराम है, जिसे भोग और ऐश्वर्य नहीं चाहिएँ, जिसकी तृष्णाएँ मिट

गईं, जिसे नाम-मान-शान की चाह नहीं, ऐसा व्यक्ति ही प्रजापालक और प्रजाप्रिय राजा हो सकता है। इसलिए तुम संन्यस्त मन से, उपराम भाव से इस गद्दी को स्वीकार करो।'' उपरोक्त प्रसंग का भाव यही है कि जिसके भीतर शांति की शक्ति का साम्राज्य है वही राजकार्य चलाते हुए स्वयं सुखी और शांत रह सकता है और प्रजा को भी सुख-शांति प्रदान कर सकता है। इस शक्ति के अभाव में राज्य-सत्ता, राज्य-लिप्सा में बदल जाती है जिसका घिनौना खेल हम अपने चारों ओर देख रहे हैं।

2. धर्म-सत्ता – धर्म की वास्तविक शक्ति है पवित्रता और अहिंसा। धर्म की रक्षा तीर-तलवारों से नहीं हो सकती। अगर हम धर्म को बल देना चाहते हैं तो अपने आपको नैतिकता संपन्न, नियम और मर्यादा संपन्न एवं गुण संपन्न बनाएँ। अपने जीवन को आदर्श बनाना ही धर्म को सहारा देना है। लेकिन धर्म के इस मर्म को समझने वाले लोग कितने हैं? धर्म और भक्ति के आकाश में गिने-चुने ध्रुव तारे, समय-समय पर प्रकट हुए। उनके प्रकाश में जनसाधारण ने धर्म के असली स्वरूप को देखा लेकिन उनके जाने के बाद फिर कुहासा छा गया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस की जीवन कहानी में आता है कि एक बार उनके बैठने के स्थान की चद्दर के नीचे स्वामी विवेकानन्द ने एक रुपया रख दिया। जब उन्होंने आसन ग्रहण किया तो असुविधा महसूस की और चद्दर को उठा-उठाकर देखने लगे। जब एक रुपया चद्दर के नीचे से निकला तो स्वामी विवेकानन्द से कहा – ''ठीक है रे, गुरु को अच्छे से परख लेना चाहिए।'' उनकी पवित्रता भी कसौटी पर परखे खरे सोने जैसी थी। कंचन और कामिनी उन्हें कभी नहीं लुभा सके। लेकिन आज की धर्म-सत्ता, पवित्रता और अनासक्ति, इन दोनों शक्तियों से वंचित है। इसलिए धर्म के नाम पर दिखावा, एक-दूसरे से बड़ा होने की रीस, गद्दी हथियाने की होड़, नाम-मान-शान की लड़ाई, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन का आकर्षण आदि बातों ने इसके रूप को कुरूप कर दिया है। इस अशक्त धर्म को सशक्त, शांति की शक्ति से ही किया जा सकता है।

3. विज्ञान की सत्ता – वैज्ञानिकों का मूल उद्देश्य यही रहा है कि वे प्रकृति के पाँचों तत्वों का इस प्रकार प्रबंधन करें कि मानव को दीर्घकाल तक सब आवश्यक चीजों की आपूर्ति होती रहे। शरीर भी पाँच तत्वों का बना है। विज्ञान ने इस शरीर रूपी प्रकृति को भी ज़रा और रोग से मुक्त करने में एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया हुआ है लेकिन वैज्ञानिक जितनी तीव्र गति से दौड़ लगा रहे हैं, समस्याएँ भी उतनी तीव्र गति से बढ़ रही हैं। बढ़ती हुई गर्मी, बनावटी जीवन से उत्पन्न हुई समस्याएँ, बंजर होती भूमि, उत्पादित चीज़ों की घटती हुई गुणवत्ता, प्राणवायु का गिरता स्तर, ये सब बातें विज्ञान को चुनौती दे रही हैं। ऐसे में वैज्ञानिक भी माथे में प्रश्नचिह्न लिए खड़े हैं कि अब क्या होगा? इस प्रश्न का उत्तर यही है कि अब जो कुछ होगा, वह शांति की शक्ति से ही होगा क्योंकि सभी प्राकृतिक हलचलों, प्रदूषणों और प्राकृतिक संकटों का मूल कारण है, व्यक्ति के संकल्पों की हलचल, व्यक्ति के संकल्पों का प्रदूषण और व्यक्ति के संकल्पों का संकट। व्यक्ति को इन समस्याओं से मुक्त करेगी शांति की शक्ति। जब मन स्थिर हो जाएगा तो प्रकृति भी स्थिर और सुखदायी बन जायेगी।

शान्ति की शक्ति के सफल प्रयोग

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा और प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा ने आबू की शांत वादियों में इस शांति की शक्ति के अनगिनत सफल प्रयोग किए। प्यारे ब्रह्मा बाबा ने प्रातः दो बजे उठकर मन के शांत

और एकरस प्रवाह के द्वारा अनिद्रा से परेशान कितने ही बीमारों को मीठी नींद सुलाया, स्वभाव-संस्कारों से परेशान कितने ही लोगों को स्वपरिवर्तन की शक्ति प्रदान की और कितनी ही लगनशील आत्माओं को दिव्य अनुभूतियाँ भी करवाईं। आबू में आज भी उनका कमरा शांति के ऐसे प्रकंपन प्रदान करता है जो लाखों पर्यटक उससे प्रभावित और प्रेरित होकर लौटते हैं। जगदम्बा माँ की शांति की शक्ति के आगे कैसी भी नकारात्मक वृत्ति वाली आत्मा परिवर्तित हो जाती थी। खराब सोचने की उसकी अक्ल ही गायब हो जाती थी। इस शांति की शक्ति से उन्होंने हज़ारों आत्माओं के भीतर के ज़हर को अमृत में बदला।

ईश्वरीय प्रेरणाओं को कैच करने का साधन

ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में भी शांति की शक्ति विशेष असरकारक है। इस शक्ति की विशेष उपलब्धि यह है कि इससे मन क्लीन और क्लीयर हो जाता है। ऐसा मन ईश्वरीय प्रेरणाओं को कैच कर सकता है। इन प्रेरणाओं के द्वारा कम समय में अधिक सफलता मिलती है। जैसे एक पनडुब्बी समुद्र में बहुत गहराई में जाकर भी जल के प्रभाव से मुक्त रह पाती है, इसी प्रकार शांति की शक्ति से मन इतना निर्लिप्त हो जाता है कि वह संसार की हर बुराई से अछूता रह सकता है। संसार में रहते भी संसार की पहुँच से परे हो जाता है। एक बार स्वामी रामकृष्ण परमहंस से किसी ने पूछा था कि हम जन-जन को आपका संदेश दें तो क्या गारंटी है कि वे सुन ही लेंगे। उन्होंने उत्तर दिया कि जब फूल पूरा खिल जाता है तो उसे भौंरों के पास निमंत्रण भेजना नहीं पड़ता, वे स्वत: चले आते हैं। शांति की शक्ति का अभ्यास करते-करते एक साधक का मन पूर्ण विकसित फूल की तरह से खुशबूदार, मुलायम और गुणसंपन्न बन जाता है तो उससे निकलती हुई शांति की खुशबू, जिज्ञासु रूपी भौंरों को अपने आप आकर्षित कर लेती है।

शान्ति की शक्ति को प्राप्त करने के तरीके

जिस प्रकार कोई व्यक्ति चलता-चलता थक जाता है तो कुछ क्षण विश्राम कर लेता है। विश्राम के लिए कोई शांत व छायादार जगह ढूँढ़ता है। इसी प्रकार, मानव मन, कर्म करते-करते बहुत हलचल में आते-आते जब थक जाता है तो उसके लिए एकांत व छाया वाला सबसे सुंदर स्थान परमधाम है। वहाँ परमात्मा पिता के प्रेम की मीठी छाया भी है और वह वाणी से परे का निर्वाणधाम भी है इसलिए कर्म करते हुए बीच-बीच में मन को उस एकांत और प्रभु-प्रेम की छाया वाले स्थान पर ले जायें तो शांति की शक्ति एकत्रित होती जाती है। वहाँ जो सुकून मिलता है उसका असर कर्म करते हुए भी हमारे ऊपर बना रहता है। लेकिन इसके लिए तीन बिंदु लगाने का पक्का अभ्यास चाहिए। **तीन चीज़ें व्यक्ति को परमधाम तक की उड़ान भरने से रोकती हैं – 1. बीती हुई घटनाओं की स्मृति, 2. शरीर की स्मृति, 3. शरीर के संबंधों की स्मृति। घटनाओं की स्मृति से मुक्त होने का तरीका है, अब तक जो बीता उसे बिंदु लगा दो। शरीर की स्मृति से मुक्त होने का तरीका है, आत्म-स्मृति का बिंदु लगा दो और विभिन्न संबंधों की यादों से मुक्त होने का तरीका है, सर्व संबंधी पिता परमात्मा के स्वरूप की बिंदी लगा दो। इस प्रकार संसार में रहते हुए, सर्व ज़िम्मेवारियाँ पूरी करते हम शांति की शक्ति एकत्रित कर सकते हैं। हम सभी ने अनेक जन्म भक्ति की, उस भक्ति की शक्ति से भगवान हमें मिला और अब हम पल-पल शांति की शक्ति एकत्रित करेंगे तो उसके फलस्वरूप विश्व परिवर्तन होगा अर्थात् यह संसार स्वर्ग बन जाएगा।**

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश